॥ श्रीः ॥

हरिदास-संस्कृत-ग्रन्थमाला
६५

॥ श्रीः ॥

अखिलब्रह्माण्डनायकश्रीशिवनिर्मितः

शिवजातकः

'शिशुतोषिणी' भाषाटीकोपेतः

टीकाकारः—

पं० श्रीमातृप्रसाद पाण्डेयः

मिर्जापुरमण्डलान्तर्गताहीग्रामस्थशङ्करपाठशालाध्यापकः

सम्पादकः—

पं० श्रीपुष्पलालझा ज्यौतिषाचार्यः

प्रकाशकः—

चौखम्बा संस्कृत सीरिज आफिस
बनारस

द्वितीयावृत्तिः] मूल्यं ≠)— [ई० १९५७

प्राक्कथन

त्रिकालज्ञ महर्षियों ने 'ज्यौतिषं नयनं स्मृतम्' कहकर यह सिद्ध कर दिया है कि शरीर के अंगों में जैसा सबसे प्रधान नेत्र है उसी प्रकार शास्त्रों में सबसे श्रेष्ठ ज्यौतिष शास्त्र ही है। इसी त्रिस्कन्ध ज्यौतिष के फलित भाग का यह लघु ग्रन्थ 'शिवजातक' है। इस ग्रन्थ को लोककल्याणकारिणी जगदम्बा श्री पार्वतीजी के आग्रह से परम कारुणिक भूतभावन भगवान श्री शंकरजी ने स्वयं रचा है। इस छोटे से ग्रन्थ में ही श्री शंकर जी ने सूत्ररूप से समस्त जातकतत्त्वों को कह दिया है। कहा तो यह जाता है कि श्री शिवजी से सुनने के बाद ही श्री पार्वतीजी ने लोकोपकारार्थ 'गौरीजातक' का प्रणयन किया। यह ग्रन्थ जातक ग्रन्थों में अति प्राचीन माना जाता है। अभी तक इसका कोई भी अन्य संस्करण उपलब्ध न होने के कारण इस बार प्रकाशक महोदय ने प्रस्तुत द्वितीय संस्करण का सम्पादन भार मुझे दिया। सम्पादन करते समय यत्र तत्र इस ग्रंथ का पाठ बहुत ही त्रुटिपूर्ण प्रतीत हुआ जिसको मैंने ग्रन्थान्तर अवलोकन करके यथामति शुद्ध कर दिया है। टीकाकार श्री पाण्डेय जी के दिवंगत हो जाने के कारण उनसे परामर्श लेने का अवसर भी मुझे प्राप्त न हो सका, अतः विद्वान् पाठकों से निवेदन है कि जिनके पास शिवजातक की प्राचीन हस्तलिखित प्रति हो वे कृपया मुझे सूचित करने का कष्ट करेंगे जिससे मैं अग्रिम संस्करण में इसे और भी विशद कर सकूँ।

रामनवमी
संवत् २०१४

विनीत—
पुष्पलाल झा

॥ श्रीः ॥

शिवजातकः

'शिशुतोषिणी' हिन्दीटीकोपेतः

देव्युवाच—

देव देव महादेव सर्वज्ञ शशिभूषण ।
ज्योतिषार्णवपीयूषं संक्षेपेण वदस्व मे ॥ १ ॥

श्रीविश्वनाथं गिरिजां गणेशं प्रणम्य भानुं कमलापतिं च ।
विरच्यते श्रीशिवजातकस्य टीका मया मातृप्रसादविप्रैः ।

पार्वतीजी महादेवजी से बोली हे देव देव ! महादेव ! सर्वज्ञ ! शशिभूषण ! संक्षेप में ज्योतिषरूपी समुद्र का अमृत (सार) को मुझसे कहिये ॥१॥

अनुग्रहार्थं लोकस्य चापि कारुण्यवत्सल ।
दैवज्ञशास्त्रसारं च फलभागं वदस्व मे ॥ २ ॥

हे कारुण्यवत्सल ! लोगों के ऊपर अनुग्रह करके हमसे ज्योतिष शास्त्र के सार फलितभाग को ही कहिये ॥ २ ॥

ईश्वर उवाच—

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि सावधानेन तच्छृणु ।
सप्तविंशतिऋक्षाणि द्वादशा राशयः स्मृताः ॥ ३ ॥

महादेवजी बोले हे देवि ! जो मैं कहता हूँ उसे तुम सावधान होकर श्रवण करो, २७ नक्षत्र और १२ राशियाँ हैं ॥ ३ ॥

सूर्य्यादीनां ग्रहाणां च नीचोच्चस्थानकाः स्मृताः ।
राहुः केतुस्तु सर्वेऽपि राशयः स्वगृहास्तथा ॥ ४ ॥

सूर्य आदि ग्रहों का नीच ऊंच स्थान कहा गया है (किस-किस राशिका कौन-कौन ग्रह नीच ऊंच है, तथा किस-किस राशिका कौन-कौन ग्रह स्वामी* है) और राहु केतु की सब राशियाँ स्वगृह कही गयी हैं ॥ ४ ॥

*तुङ्गेऽजे तौलि नीचो गहनचरपतिः पद्मिनी प्राणपालः,
शत्रू दैत्येज्यमन्दौ शशधरतनयो मुख्यतोमान्यभावः ।
शेषा मित्राणि खेटा उपचयसुखदो मध्यमः कोशकोणे,
केन्द्रे दुष्टातिदुष्टो व्ययगजभवने कीर्तितः कोविदोच्चैः ॥ १ ॥
कर्काधीशो वृषोच्चो जलनिधितनयो वृश्चिको यस्य नीचो,
मित्रे चण्डांशुसौम्यौ तदनु परखगाः सन्ति सामान्यभावः ।
पाताले कोशकोणे जनकभवग्रहे सर्वसिद्धार्थकारी,
सामान्यो दर्पकामे तदनु परिगृहे चन्द्रमा न प्रशस्तः ॥ २ ॥
मेषालीशो मृगोच्चः सलिलचरनतश्चन्द्रजो यस्य शत्रु–
र्मित्राणान्द्वर्कजीवस्तदनु परखगौ द्वौ च सामान्यभावौ ।
राज्ये लाभे त्रिषष्ठे सकलसुखकरः कीर्तितो ब्रह्मपुत्रै–
रन्ये भावे न शस्तो झटिति फलप्रदो मङ्गलः खड्गहस्तः ॥ ३ ॥
कामेशः कन्यकोच्चः प्रणतजलचरो यस्य शत्रुर्हिमांशुः,
मित्राणीनार्कशुक्राः कुसुतगुरुसमौ कोशगेहे न शस्तः ।
लग्ने लाभे चतुर्थे सुतनवजनके कामगेहे प्रशस्तः,
अन्ये भावे न शस्तो हिमकरतनयः कीर्तितो गर्गमुख्यैः ॥ ४ ॥
कर्कोच्चो नक्रनीचो विबुधपतिगुरुर्मीनकोदण्डनाथो
मित्राणीन्द्वर्कभौमाः समरवितनयो वैरिणौ सौम्यशुक्रौ ।
कोणे केन्द्रायकोशे अत शुभफलदो मध्यगो भ्रातृगेहे,
रन्ध्रे कैवल्यदाता तदनुनरपदे नैव जीवः प्रशस्तः ॥ ५ ॥
मीनोच्चः स्त्री च नीचस्तुलवृषभपतिः वैरिणौ भानुचन्द्रौ,
सामान्यौ पूज्यभौमौ तदनु च सुहृदौ सौम्यमन्दौ ग्रहौ द्वौ ।
सम्प्राप्तौ लाभगेहे तनुसुखजनके कोणकोशे प्रशस्तः,
अन्ये भावे च शस्तो वदति च विदुषः पूर्वग्रन्थेषु तज्ज्ञः ॥ ६ ॥

जन्मकाले तु संप्राप्ते लग्नं निश्चित्य पण्डितः।
तस्मिन् काले खेचराणां चारं सम्यग् विनिश्चयेत् ॥ ५ ॥

पण्डित-जन्म समय प्राप्त होने पर उस समय के लग्न का निश्चय करके बाद में ग्रहों के चार का भी निश्चय करें ॥ ५ ॥

पूर्वमायुः परीक्ष्यैव पश्चाल्लक्षणमादिशेत्।
नीचलक्षणज्ञानेन आयुषा व्यर्थमाप्नुयात् ॥ ६ ॥

पहले आयु का विचार कर बाद में शुभाशुभ लक्षण को कहे, नीच लक्षण ज्ञान से अर्थात् न्यून आयु से सब फलादि के विचार का उद्योग करना व्यर्थ है॥६॥

भावप्रवृत्ते हि फलं प्रवृत्तिः, पूर्णं फलं भावसमासकेषु।
ह्रासः क्रमाद् भावविरामकाले, फलस्य नाशः कथितो मुनीन्द्रैः ॥

भाव की प्रवृत्ति होते ही पूर्ण फल की प्रवृत्ति (आरम्भ) होती है। भाव के

तौलोच्चो मेषनीचो हरिणघटपतिः पद्मिनी मालपुत्रो,
दुष्टौ द्वौ भानुभौमौ बुधसिततमसा यस्य मित्राणि सर्वे।
सामान्यो देवमन्त्री रसशिवसहजे चार्कगो वातिशस्तः,
अन्ये भावे न शस्तो मुनिगणसहितैर्भाषितः पूर्वधीरैः ॥ ७ ॥

कामोच्चः कामिनीशः प्रणतशरचरः सिंहिकागर्भभूतो,
दुष्टाः सूर्येन्दुभौमाः बुधसिततनयो यस्य मित्राणि खेटाः।
सामान्यो देवपूज्यः सहजरसशिवे सर्वदोषप्रहर्ता,
शेषे भावे न शस्तः कलियुगफलदा कालरुद्रा वदन्ति ॥ ८ ॥

चापोच्चः कामनीचो वनरसचरपः कज्जलाभं करालः,
सिंहो मूलत्रिकोणे हितसमरिपवो राहुवद्भावभर्ता।
कोपात्मा कोपकेलिर्हिमकरदमनः क्रूरकर्मा कठोरौ,
म्लेच्छाणां कार्यकर्ता झटिति कलियुगो विक्रमाङ्गारकेतुः ॥ ९ ॥

चक्रे सूर्येऽतिशस्तः सुखभवनगतः पूर्णचन्द्रोऽतिशस्तो,
भौमो वह्नौ प्रशस्तो धनसदनगतश्चन्द्रपुत्रोऽतिशस्तः।
कोणे जीवोऽतिशस्तस्तनुगतभृगुजो विक्रमार्कीप्रशस्ते,
लाभे सर्वे प्रशस्ताः कथितफलकराः पाण्डुपुत्रा वदन्ति ॥ १० ॥

मध्य में सम फल अन्तमें क्रमसे ह्रस्वता को प्राप्त होकर फलका नाश होता है ॥ ७ ॥

प्रथमं लग्नभावश्च द्वितीयं धनमेव च ।
तृतीयं भ्रातृभावं स्याच्चतुर्थं मातुरेव हि ॥ ८ ॥
पञ्चमं तु त्रिकोणं च षष्ठं तु रिपुसंज्ञकम् ।
जायास्थानं सप्तमं स्यादष्टमं निधनं तथा ॥ ९ ॥
नवमं तु त्रिकोणं स्यात् तदेव पितृसंज्ञकम् ।
दशमं कर्मसंज्ञं स्याल्लाभमेकादशं तथा ॥ १० ॥
द्वादशं तु व्ययस्थानमिति भावाः प्रकीर्तिताः ।
तेषां मध्ये भावपञ्च दुःखदा इति कथ्यते ॥ ११ ॥

प्रथम लग्नभाव, द्वितीय धनभाव, तृतीय भ्रातृभाव और चतुर्थ मातृभाव है। एवं पांचवां त्रिकोण (सुत), छठवां शत्रु, सातवां स्त्रीभाव आठवाँ मृत्युभाव, नवाँ त्रिकोण (धर्म), दशवाँ कर्म तथा पितृसंज्ञक, ग्यारहवाँ लाभ और बारहवाँ व्यय भाव है। यह जो १२ भाव कहे गये हैं इनके मध्यमें ५ भाव दुःखदारिद्र्य करने वाले हैं ॥ ८–११ ॥

लाभं रन्ध्रं तृतीयं च शत्रुस्थानं व्ययं तथा ।
एतद्योगेन यद्योगः तन्नाशं प्रतिपद्यते ॥ १२ ॥

लाभ, रन्ध्र (अष्टम), तृतीय, शत्रुस्थान और व्यय ये ही वे पाँच भाव हैं, जिनके योग से जायमान योग नाश को प्राप्त होता है ॥ १२ ॥

चत्वारो राशयो भावाः केन्द्रकोणशुभावहाः ।
तेषां संयोगमात्रेण ह्यशुभोऽपि शुभं भवेत् ॥ १३ ॥

चार राशि बोधक केन्द्र और कोण शुभ है, इनके योगमात्र से अशुभ भी शुभ होता है ॥ १३ ॥

केन्द्रश्चतस्रो विख्यात ऋषिभिस्तत्वदर्शिभिः ।
तेषां मध्ये तु शुभदौ कर्मबन्धू सुसंज्ञकौ ॥ १४ ॥

तावेतौ योगकर्तारौ शेषौ तु फलभागिनौ ॥ १५ ॥

तत्त्वज्ञ ऋषिगण केन्द्र के चार (१।४।७।१०) स्थान कहे हैं, इनके मध्यमें भी कर्म (दशम) और बन्धु (चतुर्थ) दो योगके करने वाले हैं तथा विशेष शुभ फल देते हैं और शेष दो साधारण फल के भागी हैं ॥ १४–१५ ॥

लक्ष्मीस्थानं त्रिकोणः स्याद् विष्णुस्थानं तु केन्द्रकम् ।
तेषां संयोगमात्रेण चक्रवर्ती नृपो भवेत् ॥१६॥

त्रिकोण लक्ष्मी का स्थान है, केन्द्र विष्णु का स्थान है, इन दोनों के संयोग से अर्थात् केन्द्रेश कोणेश के योग से चक्रवर्ती राजा होता है। जैसे किसीका धन लग्न का जन्म है तो केन्द्रेश गुरु बुध है कोणेश मंगल सूर्य है, धर्म में सूर्य गुरु, कर्ममें मंगल बुध है, अतः चक्रवर्ती योग हुआ॥ १६ ॥

(१)लग्नाधिपोऽतिबलवानशुभैरदृष्टः,
केन्द्रस्थितः शुभखगै(२)रवलोक्यमानः ।
(३) दोषान् व्यपोह्य सकलानपि भाग्यतश्च,
दीर्घायुराप्तिरभवेच्च नवेशयोगात् ॥ १७ ॥

लग्नेश विशेष बलवान् होकर केन्द्रमें हो, उसे शुभग्रह देखते हों और पापग्रह न देखते हों तो नवेश योग होता है। इस योग में उत्पन्न मनुष्य सब दोषों का संहार करनेवाला, भाग्यवान और दीर्घायु होता है ॥ १७ ॥

लग्नाधिपः कोणपसंयुतश्चेद् ददाति सौभाग्यमतीव कीर्तिम् ।
साम्राज्यलाभं च सुधर्मलाभं दीर्घायुराप्तिश्च सदा नराणाम् ॥१८॥

यदि लग्नेश त्रिकोण के स्वामी के साथ हो तो वह सौभाग्य और विशेष

---

(१) बृहज्जातकस्यारिष्टाध्यायस्थद्वादशश्लोकटीकायाम् अरिष्टभङ्गस्य षोडशश्लोकाः, तन्मध्ये द्वितीयः श्लोकः ।

(२) फलैरिति बृह० ।

(३) मृत्युं विधूय विदधाति सुदीर्घमायुः ।
साधं गुणैर्बहुभिरूर्जितया च लक्ष्म्या ॥ बृहज्जातकटीकायां पाठः ।

कीर्ति को देता है तथा साम्राज्य, सुधर्म और दीर्घायु को देनेवाला होता है ॥ १८ ॥

लग्नाधिपो रन्ध्रपसंयुतश्चेदल्पायुरैश्वर्यविनाशनश्चेत् ।
शुभैरदृष्टो यदि पापदृष्टः, करोति जातन्न चिरायुषश्च ॥ १९ ॥

लग्नेश अष्टमेश से संयुक्त हो तो अल्पायु होता है, धनका नाश करता है, यदि उसे शुभग्रह न देखते हों और पापग्रह देखते हों तो बालक की बड़ी आयु नहीं होती है ॥ १९ ॥

सुत(१)मदननवान्त्यरन्ध्रेष्वशुभयुतो मरणाय शीतरश्मिः ।
भृगुसुतगुरुचन्द्रपुत्रदृष्टो, यदि न भवेच्च चिरं प्रशान्तचित्तः॥२०॥

यदि चन्द्रमा पापग्रह से युक्त होकर ५, ७, ९, १२, ८, इन स्थानों में से किसी में हों और उनको बलवान् शुक्र बुध बृहस्पति न देखते हों तो बालक की मृत्यु होती है ॥ २० ॥

लग्ने राहुःस्थितो यस्य लग्नपेन युतोऽपि वा ।
चन्द्रेण तु युतश्चापि भूतग्रहवसन्नयेत् ॥ २१ ॥
तत्तद्भावेशकर्मेशौ रन्ध्रलाभैर्युतो यदि ।
ईक्षितौ वा तदीशेन तत् पाके मरणं ध्रुवम् ॥ २२ ॥

जिसके जन्म समय में लग्नपति से युत होकर राहु वा चन्द्रमा से युत होकर लग्नपति लग्न में हो तो वह भूतग्रह के बस में होता है। यदि भावेश और कर्मेश अष्टम, एकादश भाव से युत हो और उनके स्वामी से देखा जाता हो तो उसकी दशा में निश्चय मृत्यु होती है ॥ २१-२२ ॥

धनाधिपः कोणपसंयुतश्चेन्महाधनी भूपतिभाग्ययोगः ।
दयाऽनुकम्पी बहुपोषकश्च विद्याऽधिको मन्दिरसौख्यवाँश्च ॥२३॥

धनेश नवमेश से युक्त हो तो महाधनी, भूपतिभाग्ययोग होता है,

---

(१) बृहज्जातके—सुतमदननवान्त्यरन्ध्रेष्वशुभयुतो मरणाय शीतरश्मिः । भृगुसुतशशिपुत्रदेवपूज्यैर्यदि बलिभिर्न युतोऽवलोकितो वा । अरिष्टाध्याये श्लो.११

अर्थात् वह महाधनी भाग्यशाली राजा होता है, वह दया करने वाला, बहुत लोगों का पालन करने वाला, अधिक विद्यावाला, मन्दिर-गृहादि को बनवाने वाला और सौख्य करने वाला होता है ॥ २३ ॥

त्रिकोणयोर्यदाऽन्योन्यं संयुक्तो वीक्षितोऽपि वा ।
तत्काले श्रियमाप्नोति केन्द्रपेन विशेषतः ॥ २४ ॥

दोनों त्रिकोण ५-९ के स्वामी यदि एक राशि में हों वा परस्पर देखते हों तो शीघ्र लक्ष्मी प्राप्त होती है। यदि वे केन्द्र के स्वामी से युत दृष्ट हो तो विशेष लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ॥ २४ ॥

दुष्टभावपसंयोगे फलं श्रियमवाप्नुयात् ॥ २५ ॥

दुष्ट भाव के स्वामी से युक्त वा दृष्ट हो तो मिश्र [भला बुरा दोनों] फल होता है ॥ २५ ॥

त्रिकोणपाभ्यां यदि बन्धुनाथो युतोऽपि वा दृष्टियुतोऽपि वाऽथ ।
स राजलक्ष्मीसहितो मनुष्यो विद्याऽधिको वाहनभाग्यवांश्च ॥२६॥
मातृसौख्यप्रदश्चैव बन्धुपोषणतत्परः ।
गृहसौख्यप्रदश्चैव भोगवान् स जितेन्द्रियः ॥ २७ ॥

यदि चतुर्थ स्थान का स्वामी त्रिकोण के स्वामी से युत हो वा दृष्ट हो तो वह मनुष्य राजलक्ष्मी से युत, अधिक विद्या तथा वाहन वाला, भाग्यवान् होता है। माता को सुख देने वाला, बन्धुओं के पालन में तत्पर, गृहसुख दाता, भोगी और जितेन्द्रिय होता है ॥ २६-२७ ॥

केन्द्राधिपः कोणपेन संयुतो वीक्षितोऽपि वा ।
अमात्ययोगो विख्यातस्तत्पाके मृत्युमादिशेत् ॥ २८ ॥

केन्द्र के स्वामी त्रिकोण से युत या देखे जाते हों तो, अमात्य योग होता है और इसी के पाक (दशा) में मृत्यु होती है ॥ २८ ॥

योगे कालेऽप्युच्चभागे खेचरो यदि संस्थितः ।
तद्वयोगः पूर्णयोगः स्यान्न्यूनं न्यूनत्वमाप्नुयात् ॥ २९ ॥

योग करने के समय यदि ग्रह उच्चराशि में हो तो पूर्ण योग होता है और न्यून (नीच में) हो तो न्यून (अल्पयोग) करने वाला होता है ॥ २९ ॥

कोणपाभ्यां च संयोगे योगोऽयं सार्वभौमिकः ।
तस्मिन् योगे दासपुत्रः सार्वभौमो भविष्यति ॥ ३० ॥
तस्मिन् भावे सुयोगः स्यात् तदधीशस्य योगतः ।
तत्पाके श्रियमाप्नोति भवत्येव न संशयः ॥ ३१ ॥

दोनों त्रिकोण के स्वामी के योग से जो होता है, वह सार्वभौम योग होता है, इस योग में दासपुत्र (नौकर से उत्पन्न) भी सार्वभौम (राजा) होता है, त्रिकोणाधीश के संयोग से त्रिकोण (५म, ९म) भाव में सुयोग होता है और उस भावधीश के दशा में निश्चय लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ॥ ३०–३१ ॥

रन्ध्राधिपस्तु यं भावं वीक्षितः संयुतोऽपि वा ।
तद्भावपस्य पाके वा शत्रुवृद्धिर्नृपो भवेत् ॥ ३२ ॥
लाभाधिपयुतो वाऽपि ईक्षितो वाऽपि कामया ।
तत्पाके मृत्युमाप्नोति रन्ध्रपेन युतोऽपि वा ॥ ३३ ॥
धनाधिपो नीचगतो रन्ध्रलाभैश्च ईक्षितः ।
कामपस्तु तथैव स्यान्मृत्युमाप्नोति निश्चितम् ॥ ३४ ॥
पितृभावो मातृभावः पुत्रभावस्तथैव च ।
सर्वेषामेव भावानामेतन्मात्रेण निश्चयेत् ॥ ३५ ॥

अष्टमेश जिस भाव से युत हो वा जिस भाव को देखता हो उस भावेश की दशा में शत्रुवृद्धि होती है किन्तु वह राजा होता है। जो भाव लाभेश से युत हो वा अभिलाषा से देखा जाता हो वा अष्टमेश से युत हो तो उसी भावेश की दशा में निश्चय मृत्यु होती है। धनभाव का स्वामी नीच राशि में हो उसे अष्टमेश और लाभेश देखता हो और उसी प्रकार कामेश भी हो तो निश्चय मृत्यु होती है। पितृभाव, मातृभाव और पुत्रभाव तथा सब भावों को इन्हीं भावों से निश्चय करना चाहिए ॥ ३२–३५ ॥

आदित्यादिग्रहाः सप्त एते योगाधिपाः स्मृताः ।
राहुः केतुस्तथा नास्ति संयोगेन फलन्ति हि ॥ ३६ ॥
छायाग्रहौ राहुकेतू शुभयोगे श्रियं भवेत् ।
पापयोगे तु पापः स्यादिति शास्त्रार्थनिर्णयः ॥ ३७ ॥

सूर्यादि सब ग्रह योगाधिप हैं, राहु और केतु योगाधिप नहीं हैं क्योंकि वे अन्य ग्रहों के संयोग से हीं फलों को देते हैं। राहु और केतु छायाग्रह हैं, वे शुभग्रह के योग से कल्याणकारी हैं और पापग्रह के योग से पापकारी हैं ऐसा शास्त्र में निर्णय किया गया है ॥ ३६–३७ ॥

सिंहगो राजयोगस्थो राहुं दृष्ट्वा स्थितो यदि ।
राहुपाके दुःखवन्तो भवत्येव न संशयः ॥ ३८ ॥

राजयोग कारक ग्रह सिंहराशि में हो और यदि राहु को देखता हो तो मनुष्य राहु की दशा में निःसन्देह दुःखी होता है ॥ ३८ ॥

राहुः प्रीतिमवाप्नोति केतुः प्रीतिं प्रयच्छति ।
राहोः केतोश्च संयोगे फलं तु निश्चयाद् बुधः ॥ ३९ ॥

राहु और केतु प्रीति देते हैं। राहु-केतु के संयोग से पंडित लोग फल का निश्चय करें ॥ ३९ ॥

त्रिकोणपेन संयोगे विना श्रेयो न विद्यते ।
एकेन वा कोणपेन द्वाभ्यां चैव सुखं भवेत् ॥ ४० ॥
तद्भावपस्य दाये तु शत्रुवृद्धिर्न जायते ॥ ४१ ॥

त्रिकोणेश के संयोग के विना कल्याण (उत्तम फल) नहीं होता है, एक त्रिकोणेश से वा दो त्रिकोणेश से यदि भाव का स्वामी युत हो तो फल अच्छा होता है। उस भावपति की दशा में शत्रु की वृद्धि नहीं होती है ॥ ४०–४१ ॥

यद्भावस्था रन्ध्ररिष्फारिनाथा, यद्भावेशा रन्ध्ररिष्फारिसंस्था ।
येषामीशाः संयुता वाऽथ दृष्टा तत्तद्भावो नाशतामेति नित्यम् ॥४२॥

जिस भाव में अष्टम, द्वादश, षष्ठ का स्वामी स्थित हो और जिस भाव

का स्वामी ८।१२।६ भाव में स्थित हो अथवा जिस भाव का स्वामी अष्टमेश, द्वादशेश और षष्ठेश से संयुक्त हो वा दृष्ट हो तो उन-उन भावों का नित्य ही नाश होता है ॥ ४२ ॥

धनस्थानस्थितो राहुः तदीशः शत्रुभे स्थितः ।
तस्मिन् दाये तु हानिः स्यात् पशुधान्यधनादिना ॥ ४३ ॥

राहु धनस्थान में स्थित हो और धनेश शत्रु के भवन में हो तो उसकी (धनेश की) दशा में पशु-धन-धान्य से हानि होती है ॥ ४३ ॥

यस्मिन् भावाधिपेऽप्युच्चे तद्भावो वृद्धिमाप्नुयात् ।
यस्मिन् भावाधिपे नीचे तद्भावो नाशमाप्नुयात् ॥ ४४ ॥

जिस भाव का स्वामी उच्चस्थान में हो उस भाव की वृद्धि होती है और जिस भाव का स्वामी नीचस्थान में हो उस भाव का नाश होता है ॥ ४४ ॥

नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहः स्यात्तद्भावनाथस्य च दाय काले ।
तद्भावनाशं कथयन्ति तज्ज्ञाः, पापेक्षितः पापसमन्वितो वा ॥४५॥

जन्म के समय नीचस्थान में जो ग्रह स्थित हो, वा पापग्रह से दृष्ट वा पापग्रह से युक्त होकर जो ग्रह जिस भाव में हो उस भावेश की दशा काल में उस भावोक्त फल का नाश होता है, ऐसा बुद्धिमान लोग कहते हैं ॥ ४५ ॥

भावयोगश्च कथितः मया देवि सुनिश्चितम् ।
अतः परं पृच्छसि किं तद् वदस्व शुभानने ॥ ४६ ॥

शङ्करजी पार्वती से कहते हैं हे देवि ! मैंने इस प्रकार निश्चित भावयोग को कहा, हे शुभानने ! इसके बाद तुम क्या पूछना चाहती हो सो कहो ॥४६॥

देव्युवाच—

नमस्ते देव देवेश सर्वलोकैकपूजित ।
एतेषां भावयोगानां का दशा या फलप्रदा ॥ ४७ ॥

पार्वती बोली—हे देव देवेश! सब लोकों में एक मात्र पूज्य आपको नमस्कार है। इन भाव योगों का फल किस दशा में होता है (सो कृपा कर बतावें) ॥४७॥

श्रीमहादेव उवाच—

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि सर्वलोकोपकारिणि ! ।
दशा च बहवः सन्ति केन्द्रकोणक्षयादयः ॥ ४८ ॥
तेषां मध्ये ऋक्षदशा शुभदा फलदा स्मृता ।
यः खगो योगकर्ता स्याद् दशा तस्य फलप्रदा ॥ ४९ ॥
तस्माद् ग्रहाणां च बलं सम्यक् संशोध्य बुद्धिमान् ।
कृत्तिकादीनि ऋक्षाणि सूर्यादीनां दशाः स्मृताः ॥ ५० ॥

हे सर्वलोकोपकारिणी देवि ! दशा तो केन्द्र, कोण, अष्टमेश, द्वादशेश और रोगेश आदिकी बहुत हैं। किन्तु उनके मध्यमें नक्षत्रकी जो दशा है वह शुभ फल देने वाली है, जो ग्रह योग करने वाला है उसकी दशा शुभ फल को देनेवाली है, इससे बुद्धिमान लोग ग्रहों के बल को अच्छी प्रकार संशोधन कर कार्य में परिणत करें। कृत्तिकादि नक्षत्रों में सूर्यादि ग्रहों की दशा होती है ॥ ४८–५० ॥

तेषां योगविशेषेण फलं प्राप्नोत्यसंशयम् ।
राहुकेत्वोश्च संयोगे दृष्टियोगे च जायते ॥ ५१ ॥

उन ग्रहों के विशेष योगसे फल होता है इसमें संशय नहीं है, राहु केतु के संयोग से और दृष्टियोग से भी विशेष फल होता है ॥ ५१ ॥

स्थानाधिपबलेनापि फलं प्राप्नोत्यसंशयम् ।
राजग्रहौ चन्द्रसूर्यावामात्यो भौम एव च ॥ ५२ ॥
लिपिलेखादिभिः सौम्यो गुरुर्मन्त्री विचारतः ।
भार्गवोऽत्यन्तभोगी स्याच्छनिः सेव्याधिको भवेत् ॥५३॥

स्थानस्वामी के बल से निःसन्देह फल मिलता है, चन्द्रमा और सूर्य राजा ग्रह हैं और मङ्गल अमात्य (मन्त्री) ग्रह है, बुध लेखक है और विचार से गुरु मन्त्री है, शुक्र विशेष भोगी है, शनि अधिक सेवक है ॥ ५२–५३ ॥

यच्च राज्ञा त्वमात्येन देवि ? योगेन जायते ।
तद्योगः पूर्णफलदो ह्यन्येषां स्वल्पमादिशेत् ॥ ५४ ॥

हे देवि ! जो योग राजा और मन्त्री ग्रह से होता है, वह योग पूर्ण फल को देने वाला होता है, अन्य ग्रह स्वल्प फल देने वाला होता है ॥ ५४ ॥

राश्यादौ योगपतिः नरेन्द्रो दण्डपतिस्तथा ।
मध्ये मण्डलनाथं च ग्रामपतिं च भवनान्ते ॥ ५५ ॥

राश्यादौ योगपतिस्तद्दशायामादित एव फलं स्यात् । तथा मध्ये मध्यकाले राशितृतीये भागे तत्काले एवं स्यात् ॥ ?

योगाधीशग्रह दशा के आदि में तथा सूर्य-भौम भी दशादि में फल देते हैं। शुक्र-गुरु मध्य में और शनि-चन्द्रमा दशा के अन्त में फल देते हैं। (बुध सर्वदा फल देते हैं) ॥ ५५ ॥

अस्तगो यः खगो वाऽपि राहुग्रस्तो यदा भवेत् ।
तत्पाके भावनाशः स्यादिति शास्त्रार्थनिर्णयः ॥ ५६ ॥

जो ग्रह अस्त हो वा राहुसे ग्रस्त हो उसकी दशा में भाव का नाश होता है यह शास्त्रका निर्णय है ॥ ५६ ॥

भावेशाक्रान्तराशीश उच्चस्थशुभवीक्षितः ।
तद्भावेशस्य दाये तु राज्यं भवति निश्चितम् ॥ ५७ ॥

भावेश से आक्रान्त राशीश यदि उच्चराशि में स्थित हो और शुभग्रह से दृष्ट हो तो उस भावेश की दशा में निश्चय राज्य लाभ होता है ॥ ५७ ॥

भावेशाक्रान्तराशीशो नीचगोऽस्तङ्गतोऽपि वा ।
पापैर्निरीक्षितो वाऽपि तद्भावं नाशमाप्नुयात् ॥ ५८ ॥

भावेश से आक्रान्त राशीश यदि नीच राशिमें स्थित वा अस्तङ्गत हो या पापग्रह से देखा जाता हो तो उस भाव का नाश होता है ॥ ५८ ॥

भावेशाक्रान्तराशीशो राहुग्रस्तो यदा भवेत् ।
तत्पाके मृत्युमाप्नोति भावनाशश्च जायते ॥ ५९ ॥

भावेश से आक्रान्त राशीश यदि राहु से ग्रस्त हो तो उसकी दशामें मृत्यु होती है और उस भाव का नाश होता है ॥ ५९ ॥

यद्भावे रन्ध्रपे दृष्टे तत्पतिर्नीचसंस्थितः ।
तत्पाके भावनाशं च भवत्येव न संशयः ॥ ६० ॥

अष्टमेश जिस भाव को देखता हो उसका स्वामी नीचस्थान में स्थित हो तो उसकी दशामें निःसन्देह भावका नाश होता है ॥ ६० ॥

नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहः स्यात् तद्राशिनाथो यदि स्वोच्चसंस्थः ।
तन्नीचपाके सुखमेति नित्यं तेनेक्षितो वाऽपि शुभेक्षितो वा ॥६१॥

जन्म के समय नीच स्थान में स्थित जो ग्रह हो उस राशि का स्वामी यदि उच्चस्थान में स्थित हो, वा उससे देखा जाता हो, वा शुभग्रह से देखा जाता तो नीचकी दशा में सुख होता है ॥ ६१ ॥

उच्चस्थितो जन्मनि यो ग्रहः स्यात्, तद्राशिनाथो यदि नीचसंस्थः ।
तदुच्चपाकेष्वशुभं प्रयान्ति भावेक्षितो वाऽपि विशेषतश्च ॥ ६२ ॥

जन्म के समय उच्च में स्थित जो ग्रह उसके राशि का स्वामी यदि नीच में स्थित हो तो उस उच्चकी दशामें अशुभ फल प्राप्त होता है और यदि भावसे दृष्ट हो तो विशेष अशुभ फल प्राप्त होता है ॥ ६२ ॥

सप्तमाधिपतौ नीचे रन्ध्रपेण च वीक्षिते ।
तत्पाके मृत्युमाप्नोति भवत्येव न संशयः ॥ ६३ ॥

यदि सप्तमेश नीचस्थान में हो और उसको अष्टमेश देखता हो तो उसकी (सप्तमेश) की दशामें मृत्यु होती है इसमें कुछ सन्देह नहीं है ॥ ६३ ॥

यः खगो दुष्टभावेशो योगपश्च समाश्रितः ।
तत्पाके मृत्युमाप्नोति सर्वाभीष्टविनाशनम् ॥ ६४ ॥

जो ग्रह दुष्टभाव का स्वामी हो और योगपति से युक्त हो तो उसकी (दुष्ट-भावेश) की दशा में मृत्यु होती है और सब अभीष्टों का नाश होता है ॥ ६४ ॥

यः खगः शुभभावेशः पापयुक्तेक्षितोऽपि वा ।
तत्पाके राज्यनाशः स्याद्देहनाशश्च जायते ॥ ६५ ॥

जो ग्रह शुभभाव का स्वामी हो वह पाप ग्रहसे युक्त अथवा दृष्ट हो तो उसकी दशामें राज्य का नाश होता है और देह का भी नाश होता है ॥ ६५ ॥

संयोगो द्विविधः प्रोक्त ईक्षितः संयुतोऽपि वा।
तयोर्मध्ये च फलदः पापानामोक्षणं परम् ॥ ६६ ॥
शुभानां संयुतः श्रेष्ठमिति शास्त्रविदो विदुः।
बालारिष्टा च बहवः सन्ति लोके मनीषिणाम् ॥ ६७ ।
तेषां योगाः प्रवक्ष्येऽहं सावधानेन तच्छृणु ॥ ६८ ॥

संयोग दो प्रकार का होता है एक युत दूसरा दृष्टि, इन दोनों में पापग्रहों का देखना परमफल देने वाला होता है और शुभग्रहों से संयुक्त होने से श्रेष्ठ फल होता है, ऐसा शास्त्रों के जानने वाले बुद्धिमान लोग कहते हैं। लोक में बालारिष्ट बहुत है, ऐसा मनीषी लोग कहते हैं, उन योगों को कहता हूँ सावधान होकर सुनो ॥ ६६–६८ ॥

लग्नाधिपो रन्ध्रपसंयुतश्चेत् तृतीयरन्ध्राधिपभावपानाम्।
द्विसप्तमैकादशभावपानां पाके मृतिं सिद्धिमुपैति जन्तोः ॥ ६९ ॥

लग्नेश यदि अष्टमेश से युत हो तो लग्नेश की दशा में अथवा तृतीय अष्टम भाव के स्वामी की दशा में वा द्वितीय सप्तम ग्यारहवें भावके स्वामी की दशामें मृत्यु होती है ॥ ६९ ॥

तत्तत्स्थानगतानां च पाके च मरणं भवेत्।
तेषां च शुभसंयोगे ह्यायुर्वृद्धिः प्रजायते ॥ ७० ॥

उस-उस (द्वितीय, तृतीय, सप्तम और अष्टम) स्थान स्थित ग्रह की दशा में मरण होता है, उनका शुभग्रहों से यदि योग हो तो आयु की वृद्धि होती है ॥७०॥

शैशवावस्थाकाले तु स्वल्पदोषश्च हानिकृत्।
इतरावस्थाकाले तु रोगरूपेण बाध्यते ॥ ७१ ॥

बाल अवस्थामें स्वल्पदोष भी हानि करने वाला होता है किन्तु अन्य (युवा) अवस्थामें वही स्वल्प दोष रोग रूप से बाधा पहुँचाता है ॥ ७१ ॥

इति श्रीशिवप्रणीतः शिवजातकः समाप्तः।

मुद्रकः—विद्याविलास प्रेस, बनारस–१

अस्मत्-प्रकाशित-ज्यौतिष-ग्रन्थाः—

१ **ग्रहलाघवम्** । विश्वनाथी संस्कृत टीका तथा 'माधुरी' हिन्दी टीका सहितम् ३॥)
२ **चमत्कारचिन्तामणिः** । सान्वय-'भावप्रबोधिनी' हिन्दी टीका सहितः ॥)
३ **चलनकलन-प्रश्नोत्तरविवरणम्** । ॥।)
४ **चापीयत्रिकोणगणितम्** । विविध-वासना-समलंकृतम् १॥)
५ **जातकपारिजातः** । सुधाशालिनी-विमला संस्कृत-हिन्दी टीका १०), १२)
६ **जातकाभरणम्** । सपरिशिष्ट 'विमला' हिन्दी टीका सहितम् ४)
७ **जातकालङ्कारः**—हरभानुदत्तकृत संस्कृत तथा भावबोधिनी हिन्दी टीकायुतः १)
८ **जैमिनिसूत्रम्** । सोदाहरण 'विमला' संस्कृत हिन्दी टीकाद्वयोपेतम् २)
९ **ताजिकनीलकण्ठी** । गंगाधरमिश्रकृत 'जलदगर्जना' सं. हि. टीकाद्वयोपेता ४॥)
१० **दैवज्ञकामधेनुः** । म० म० पं० अनवमर्शीसंघराजवरेण सङ्कलिता ४॥)
११ **परबलयन्त्रम्** ॥) १२ **प्रतिभाबोधकम्** । गंगाधरमिश्रकृत टीका ॥।)
१३ **बीजगणितम्** । जीवनाथी संस्कृत तथा 'विमला' हिन्दी टीकायुतम् ८)
१४ **बीजवासना** (सोपपत्तिक बीजगणित) सम्पादकः ज्यो. आ. गङ्गाधरमिश्रः ॥≈)
१५ **बृहज्जातकम्** । सोदाहरणोपपत्ति 'विमला' हिन्दी टीका सहितम् ३॥)
१६ **मुहूर्त्तमार्तण्डः** । 'मार्तण्डप्रकाशिका' संस्कृत हिन्दी टीका सहितः ३)
१७ **रेखागणितम्** । षष्ठाध्याय-परिभाषारूपपञ्चमाध्यायसहितम् हिन्दी टीका ।≈)
१८ **रेखागणितम्** । ११-१२ अध्यायौ, श्रीसुधाकरद्विवेदि विरचितम् । १॥)
१९ **रत्नगर्भाचक्रं** । हरिप्रिया भा.टी. ≥) २० **लग्नरत्नाकर** 'शिशुबोधिनी' टी. ।≈)
२१ **लघुपाराशरी-मध्यपाराशरी** । सोदाहरण-'सुबोधिनी' सं० हि० टीकायुता १।)
२२ **लीलावती** । पं० श्रीमुरलीधरठक्कुर कृत नवीनवासनासहिता ३)
२३ **वनमाला** । 'अमृतधारा' हिन्दी टीका सहिता ।)
२४ **शिशुबोधः** । विमला भा.टी. ॥≈) २५ **योगिनीजातकः** । 'विमला' भा.टी. ।-)
२६ **शीघ्रबोधः** । अनूपमिश्रकृत 'सरला' हिन्दी टीका सहितः १)
२७ **षट्पंचाशिका** । विभा संस्कृत-हिन्दी टीका सहिता ।≈)
२८ **सरलत्रिकोणमितिः** । म. म. बापूदेव शास्त्रि संकलिता सटिप्पणा ४॥)
२९ **सरलरेखागणितम्** । १-२ अध्यायौ, विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदि कृतम् १)
३० **सिद्धान्तशिरोमणिः** । वासनाभाष्य तथा टिप्पणी सहित सम्पूर्णः ६)

प्राप्तिस्थानम्—**चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय, बनारस-१**

हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला २७५

॥ श्रीः ॥

गौरीजातकम्

'विमला' हिन्दीव्याख्योपेतम्

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी

॥ श्रीः ॥

हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला
२७५

॥ श्रीः ॥

गौरीजातकम्

'विमला' हिन्दीव्याख्योपेतम्

व्याख्याकारः सम्पादकश्च
काशीस्थ-श्रीकाशीज्योतिर्वित्समितिमन्त्रि-
दैवज्ञवाचस्पतिः श्रीवासुदेवः

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१
१९६८

प्राक्कथन

भारतीय ज्यौतिषग्रन्थों में शिव, गौरी आदि देव एवं गर्ग, पराशर आदि महर्षियों के नाम से अनेक जातक ग्रन्थ देखने और सुनने में आते हैं। जिनमें कुछ उपलब्ध भी हैं, उनमें लग्न और सूर्यादि प्रत्येक ग्रहों से द्वादशभावस्थित फलादेश मिलते हैं। जिससे विचार करने में बहुत तारतम्य देखकर विज्ञजनों ने केवल लग्न और चन्द्रमा को प्रधान मानकर इन दोनों से ही ग्रहों के भावज फल बताए हैं। उनमें शिवजातक, गौरीजातक, गर्गजातक आदि में से केवल चन्द्रमा से ही ग्रहों के फलादेश किये गये हैं। गौरीजातक का अन्वेषण करने पर एक ऐसा मुद्रित 'गौरीजातक' देखने को मिला जिसमें मूल श्लोको में व्याकरण की अशुद्धियाँ एवं अन्य समस्त जातकग्रन्थों से अर्थ विरोध था। मैंने जिस प्रकार सब ग्रन्थों से सामञ्जस्य हो और शुद्धपाठ रहे जिससे पाठकों को भ्रम उत्पन्न न हो इस अभिप्राय से यत्र-तत्र मूलश्लोकों को संशोधन करके तदनु-कूल अत्यन्त सरल भाषा टीका भी कर दी और इस पुस्तक के पुनर्मुद्रणादि का सर्वाधिकार जगत् प्रसिद्ध विशाल साहित्य संस्थान चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस वाराणसी को सादर

समर्पित कर दिया है जिससे ज्यौतिष प्रेमियों के निकट सरलता से यह पुस्तक पहुँच जाय और विद्वानों का भ्रम भी निवारण हो सके।

अन्त में विज्ञजनों से सविनय निवेदन है कि-मनुष्य धर्मवश या मेरी दृष्टि अथवा बुद्धि वश किंवा यन्त्रालय द्वारा जो कुछ अशुद्धियाँ रह गई हों, उनको संशोधन कर मुझे सूचित करेंगे ताकि अगले संस्करण में उसकी पूर्ति हम कर सकें।

वाराणसी
वि० सं० २०२५

विनीत—
वासुदेव

॥ श्रीः ॥

गौरीजातकम्

'विमला' हिन्दीव्याख्योपेतम्

मङ्गलाचरणम्—

गौर्या शिवमुखाच्छ्रुत्वा जातकस्य शुभाशुभम् ।
फलं लोकोपकारार्थं भुवि चापि प्रकाशितम् ॥ १ ॥
लग्नाच्चन्द्राच्च खेटानां भावजानि सुविस्तरात् ।
फलान्युक्तानि देवेन तानि देव्या समासतः ॥ २ ॥
प्रोक्तानि तत्र यानीन्दोर्भावगानां नभः सदाम् ।
शुभाशुभफलान्यत्र लिख्यन्ते विदुषां मुदे ॥ ३ ॥

श्रीपार्वती जी ने भगवान् शङ्कर के मुख से मानव के जन्म-काल से शुभाशुभ फल जो सुने, उसको लोकोपकार के लिये पृथ्वी (मर्त्यलोक) में भी प्रकाशित किया। भावार्थ यह है कि श्रीशंकर जी ने लग्न और चन्द्रमा से पृथक्-पृथक् द्वादशभावस्थ ग्रहों के शुभाशुभ फल जो विस्तार पूर्वक कहा, उसी को भगवती पार्वती जी ने केवल चन्द्रमा से जातक का जो शुभाशुभ फल कहा है उसीको हम विज्ञजनों के प्रमोदार्थ लिखते हैं ॥ १–३ ॥

विशेष—यहाँ केवल चन्द्रमा से ही रव्यादि ग्रहों के जो फल लिखे गये हैं उसका कारण यह है कि लग्न तो केवल २ घण्टे मात्र ही रहता है जो कदाचित् प्रमादवश भिन्न भी हो जा सकता है परञ्च चन्द्रमा की स्थिति लगभग ५५ घण्टे तक रहती है अतः इसमें भेद होना असम्भव ही है। इस हेतु श्रीगौरी जी ने चन्द्रमा से ही फल कहने में महत्ता दी है।

द्वादशभावस्थरविफलम्—

चन्द्रेण सहितः सूर्यो जन्मकाले यदा भवेत्।
परदेशरतो भोगी कुटुम्बेन कलिः सह ॥ १ ॥

जन्मकाल में चन्द्रमा के साथ यदि सूर्य हो तो जातक परदेशवासी, भोगी और कुटुम्ब के लोगों के साथ कलह रखनेवाला होता है ॥ १ ॥

चन्द्राद् द्वितीयभे सूर्यो जन्मकाले यदा भवेत्।
बहुभृत्यो यशस्वी च राजपूज्यो भवेन्नरः ॥ २ ॥

यदि चन्द्रमा से द्वितीय भाव में सूर्य हो तो वह मनुष्य बहुत नौकरों से युक्त, यशस्वी और राजपूज्य होता है ॥ २ ॥

चन्द्रात् तृतीयस्थानेऽर्को जन्मकाले यदा भवेत्।
स्वर्णरत्नादियुक्तोऽसौ राजतुल्यो भवेन्नरः ॥३॥

जिसके जन्मकाल में चन्द्रमा से तृतीय स्थान में सूर्य हो तो वह स्वर्ण-रत्नादि से युक्त रहनेवाला और राजा के तुल्य होता है ॥ ३ ॥

चन्द्रात् चतुर्थगः सूर्यो जन्मकाले यदा भवेत् ।
मातृहन्ता भवेद्वाऽसौ मातृभक्तिविवर्जितः ॥ ४ ॥

जन्म समय चन्द्रमा से चतुर्थ स्थान में सूर्य हो तो वह माता का विनाशक अथवा मातृभक्ति से रहित होता है ॥ ४ ॥

चन्द्रात् पञ्चमभे सूर्यो यस्य जन्मनि संस्थितः ।
सुताभिश्चासुखी चैव बहुपुत्रो भवेन्नरः ॥ ५ ॥

चन्द्रमा से पांचवे सूर्य हो तो जातक कन्या के लिये दुःखी और बहुत पुत्रों वाला होता है ॥ ५ ॥

चन्द्रात् षष्ठगः सूर्यो जन्मकाले यदा भवेत् ।
शत्रूणां जयकारी च युद्धकर्मरतः सदा ॥ ६ ॥

चन्द्रमा से छठे स्थान में सूर्य हो तो जन्म लेनेवाला शत्रुओं को जीतनेवाला और युद्धादि कर्म में रत रहता है ॥ ६ ॥

चन्द्रात् सप्तमगः सूर्यो जन्मकाले यदा भवेत् ।
सुस्त्रीकः शुभशीलश्च राज्यमानो महातपाः ॥ ७ ॥

जन्म समय में चन्द्रमा से सप्तम स्थान में सूर्य हो तो उसकी स्त्री सुशीला और सुन्दरी होती है तथा स्वयं भी सुशील और राजमान्य होता है ॥ ७ ॥

विशेष—लग्न से सप्तम में सूर्य के रहने से स्त्री-सुख बाधक योग कहा गया है और साथ ही यह भी कहा गया है कि लग्न के समान ही चन्द्रमा का भी फल समझना। परञ्च यह अन्य भावों के साथ समझना। भावार्थ यह है कि सप्तम में सूर्य के

होने से निश्चतरूप से पूर्णिमा तिथि रहती है, अतः पूर्ण बली चन्द्र से शुभफल कहना युक्ति सङ्गत ही है।

चन्द्रादष्टमगः सूर्यो जन्मकाले यदा भवेत्।
सर्वदा कष्टयुक्तश्च नानारोगैः प्रपीडितः ॥ ८ ॥

चन्द्रमा से अष्टम स्थान में सूर्य हो तो वह जातक सर्वदा कष्टयुक्त और अनेक रोग से पीड़ित रहता है ॥ ८ ॥

चन्द्रान्नवमभे सूर्यो जन्मकाले यदा भवेत्।
धर्मात्मा सत्यवादी च बन्धुक्लेशी सदा भवेत् ॥९॥

चन्द्रमा से नवम स्थान में सूर्य हो तो जन्म लेनेवाला धर्मात्मा, सत्यवादी परञ्च बन्धुजनों से क्लेश पानेवाला होता है ॥ ९ ॥

चन्द्राद् दशमभे सूर्यो जन्मकाले यदा भवेत्।
राजमान्यो बहुज्ञाता प्रसिद्धः कुलनायकः ॥ १० ॥

यदि चन्द्रमा से दशम स्थान में सूर्य हो तो जातक राजाओं से सम्मानित, ज्ञाता, ख्याति प्राप्त और अपने कुल में श्रेष्ठ होता है ॥ १० ॥

चन्द्रादेकादशे सूर्यो जन्मकाले यदा भवेत्।
बहुव्यापार युक्तोऽसौ धनवांश्च न संशयः ॥ ११ ॥

जिसके जन्मकाल में चन्द्रमा से एकादशभाव में सूर्य हो तो जातक अनेक प्रकार के व्यापारों में लगा रहने के कारण धनवान् हो, इसमें संदेह नहीं ॥ ११ ॥

चन्द्राद् द्वादशभे सूर्यो जन्मकाले यदा भवेत् ।
नेत्ररोगभयं तस्य जायते च बहुव्ययः ॥ १२ ॥

चन्द्रमा से बारहवें स्थान में यदि सूर्य हो तो जातक नेत्ररोग से पीड़ित रहनेवाला और अधिक अपव्ययी होता है ॥ १२ ॥

इति रविफलम् ।

द्वादशभावस्थ भौमफलम्—

चन्द्रेण सहितो भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
रक्ताक्षी रुधिरस्रावी रक्तवर्णो भवेन्नरः ॥ १ ॥

जन्मकाल में चन्द्रमा के साथ यदि मङ्गल हो तो जातक लाल नेत्रवाला, रक्तश्राव रोग से युक्त और रक्त वर्ण वाला होता है ॥ १ ॥

चन्द्राद् द्वितीयभे भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
धराधीशो भवेज्जातः कृषिकर्ता न संशयः ॥ २ ॥

यदि चन्द्रमा से द्वितीय स्थान में मङ्गल हो तो वह मनुष्य बहुत भूमि का मालिक और खेती करनेवाला होता है ॥ २ ॥

चन्द्रात् तृतीयभे भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
बहुभ्रातृसमायुक्तः तुल्यशीलपराक्रमः ॥ ३ ॥

जिसके जन्म काल में चन्द्रमा से तृतीय स्थान में मङ्गल हो तो बहुत भाई से युक्त और शीलवान् तथा बराबर पराक्रम बना रहे ॥ ३ ॥

चन्द्राच्चतुर्थभे भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
सुखभङ्गो दरिद्रः स्यात्पुंसः स्त्री म्रियते ध्रुवम् ॥ ४ ॥

जन्म समय चन्द्रमा से चतुर्थ भाव में मङ्गल हो तो वह सुख-हीन, दरिद्र और उसके सामने ही उसकी स्त्री का मरण अर्थात् स्त्री-सुख से रहित होता है ॥ ४ ॥

चन्द्रात् पञ्चमभे भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
पुत्रहीनो नरः स्त्रीणां लग्ने पतति निश्चितम् ॥ ५ ॥

चन्द्रमा से पांचवे मङ्गल हो तो वह पुरुष पुत्रहीन होता है । और यदि ऐसा योग स्त्री की कुण्डली में हो तो निश्चय ही उक्त फल समझना ॥ ५ ॥

चन्द्राच्च षष्ठभे भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
अधर्मविमुखो वीरो रक्तरोगेण पीडितः ॥ ६ ॥

जन्म समय में चन्द्रमा से षष्ठ स्थान में मङ्गल हो तो जातक अधर्मीजनों का विनाशक, वीर और रक्त-दोषादि रोग से पीड़ित रहनेवाला होता है ॥ ६ ॥

चन्द्रात्सप्तमभे भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
कुशीला स्त्री भवेत्तस्य सदा चाऽप्रियवादिनी ॥ ७ ॥

चन्द्रमा से सातवें स्थान में मङ्गल हो तो जन्म लेनेवाले की स्त्री दुःशीला और अप्रियवादिनी होती है ॥ ७ ॥

चन्द्रादष्टमभे भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
जीवहन्ता महापापी सत्य-शीलविवर्जितः ॥ ८ ॥

चन्द्रमा से अष्टमभाव में मङ्गल हो तो जातक जीवों की हिंसा करनेवाला, पापी तथा सत्य और शील रहित होता है ॥ ८ ॥

चन्द्रान्नवमभे भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
लक्ष्मीवांश्च भवेत् पुत्रैर्वृद्धकाले न संशयः ॥ ९ ॥

जिसके जन्मकाल में चन्द्रमा से नवमस्थान में मङ्गल हो वह लक्ष्मीवान (धनाढ्य) तथा वृद्धावस्था में पुत्र के द्वारा सुख लाभ होता है ॥ ९ ॥

चन्द्राद् दशमभे भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
तस्य द्वारेषु तिष्ठन्ती गजाऽश्वाद्या न संशयः ॥१०॥

यदि चन्द्रमा से दशम भाव में मङ्गल हो तो जातक के द्वार पर हाथी-घोड़े आदि वाहन रहते हैं। अर्थात् अत्यन्त धनाढ्य होता है, इसमें संशय नहीं ॥ १० ॥

चन्द्रादेकादशे भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
राजद्वारे प्रसिद्धः स्याद्यशो रूपसमन्वितः ॥११॥

जिसकी जन्मकुण्डली में चन्द्रमा से एकादशस्थान में मङ्गल हो वह राजद्वार में प्रधान, यशवान् और स्वरूपवान् होता है ॥११॥

चन्द्राद् द्वादशभे भौमो जन्मकाले यदा भवेत् ।
मातुश्चाऽसुखकारी च सदा कष्टप्रदायकः ॥१२॥

चन्द्रमा से बारहवें भाव में यदि मङ्गल हो तो जन्मलेनेवाला माता का अभक्त और सदा सबको कष्ट देता है ॥ १२ ॥

इति भौमफलम् ।

द्वादशभावस्थ बुधफलम्—

चन्द्रेण सहितः सौम्यः सुखरूपसमन्वितः ।
मृषाभाषी परद्वेषी भवेद् बन्धुजनप्रियः ॥ १ ॥

जन्मकाल में चन्द्रमा के साथ यदि बुध हो तो जातक मिथ्यावादी, द्वेषी और अपने कुटुम्बीजनों का प्रिय होता है ॥१॥

चन्द्राद् द्वितीयभे सौम्ये धन-धान्यसमन्वितः ।
गृहबन्धुजनप्राप्तिः शीतरोगैर्विनश्यति ॥ २ ॥

यदि चन्द्रमा से द्वितीय स्थान में बुध हो तो वह मनुष्य धन-धान्यादि से युक्त, गृह और बन्धुजनों से सुखी तथा शीतरोग से मृत्यु को प्राप्त होनेवाला होता है ॥ २ ॥

चन्द्रात् सहजभे सौम्यः कुरुते चाऽर्थसम्पदः ।
राज्यलाभो भवेत्तस्य महतां सङ्गमो ध्रुवम् ॥ ३ ॥

जिसके जन्मकाल में चन्द्रमा से तृतीय भाव में बुध हो वह धन-सम्पति से युक्त राज्यलाभ तथा महात्माओं की सङ्गति करनेवाला होता है ॥ ३ ॥

चन्द्राच्चतुर्थभे सौम्यः सर्वदा सुखकारकः ।
मातृपक्षे महालाभः सुखं जीवति मानवः ॥ ४ ॥

जन्मसमय चन्द्रमा से चतुर्थभाव में बुध हो-तो जातक सदा सुखी, मातृ-कुल से धनादि का विशेषलाभ तथा सुख पूर्वक जीवन बितानेवाला होता है ॥ ४ ॥

चन्द्रात् पञ्चमभे सौम्ये बुद्धिमांश्चविचक्षणः ।
रूपवांश्च महाकामी कुवाक्यं धारयेन्नरः ॥ ५ ॥

चन्द्रमा से पांचवें बुध हो तो जातक बुद्धिमान्, निपुण, रूपवान्, कामी और कटुभाषी होता है ॥ ५ ॥

चन्द्रात्षष्ठगते सौम्ये कृपणः कातरो भवेत् ।
विवादे च महाभीरू रोमशो दीर्घलोचनः ॥ ६ ॥

जन्मकाल में चन्द्रमा से षष्ठस्थान में बुध हो तो जातक कृपण, कायर, विवाद से डरनेवाला, अधिक रोमयुक्त तथा दीर्घनेत्री होता है ॥ ६ ॥

चन्द्रात्सप्तमभे सौम्ये स्त्रीणां च वशगो नरः ।
धनाढ्यः कृपणश्चैव दीर्घायुश्च भवेन्नरः ॥ ७ ॥

चन्द्रमा से सप्तमभाव में बुध जन्मकाल में हो तो जातक स्त्री के वश में रहनेवाला, धनवान् होते हुए भी कृपण (कंजूस) और दीर्घायु होता है ॥ ७ ॥

चन्द्रादष्टमभे सौम्ये देहे शीतभयं भवेत् ।
राजमध्ये प्रसिद्धश्च शत्रूणां च भयङ्करः ॥ ८ ॥

जिसके जन्मकाल में चन्द्रमा से अष्टम स्थान में बुध हो वह शीत-प्रकृति, राजाजनों में प्रसिद्ध और शत्रुओं का नाशक हो ॥८॥

चन्द्राद् धर्मगतः सौम्यः स्वधर्मस्य विरोधकः ।
अन्यधर्मरतो नृणां विरोधी दारुणो भवेत् ॥ ९ ॥

चन्द्रमा से नवम भाव में बुध हो तो जातक अपने धर्म का विरोधी और अन्य (पराये) धर्म में सदा प्रीतिकरनेवाला तथा बहुतों का विरोधी होता है ॥ ९ ॥

चन्द्राद् दशमगे सौम्ये राजयोगी नरः सदा ।
कर्कराशौ यदा चन्द्रः कुटुम्बे नायको भवेत् ॥१०॥

जिसकी जन्मकुण्डली में चन्द्रमा से दशमभाव में बुध हो वह मनुष्य निश्चित ही राजयोग को प्राप्त होता है। और यदि चन्द्रमा कर्कगत हो तो अपने कुटुम्बीजनों में प्रधान होता है ॥ १० ॥

चन्द्राल्लाभगते सौम्ये लाभकारी पदे पदे ।
पत्नीपाणिग्रहादूर्ध्वं तस्य भाग्योदयो भवेत् ॥ ११ ॥

चन्द्रमा से एकादशस्थान में बुध हो तो जातक सर्वदा लाभोन्मुख रहनेवाला होता है तथा विवाहोपरान्त भाग्योदय समझना ॥ ११ ॥

चन्द्राद् द्वादशगे सौम्ये मानवः कृपणो भवेत् ।
तत्सुतस्य जयो नास्ति लभतेचपराजयम् ॥१२॥

यदि चन्द्रमा से बारहवें स्थान में बुध हो तो जन्मलेनेवाला कृपण होता है। एवं उसकी सन्तान भी सर्वदा पराजित ही रहती है ॥ १२ ॥

इति बुधफलम् ।

द्वादशभावस्थ गुरुफलम्—

चन्द्रेण सहिते जीवे दीर्घजीवी भवेन्नरः ।
व्याधिना रहितः शूरो निर्धनो न कदाचन ॥ १ ॥

जन्मकाल में चन्द्रमा के साथ यदि बृहस्पति बैठा हो तो वह मनुष्य दीर्घजीवी, रोग रहित, वीर तथा कभी भी निर्धनता को न प्राप्त होनेवाला होता है ॥ १ ॥

चन्द्राद् द्वितीयभे जीवे राजमान्यः शतायुषः ।
अत्युग्रश्च प्रतापी च धर्मिष्ठः पापवर्जितः ॥ २ ॥

जन्मकाल में चन्द्रमा से द्वितीय स्थान में बृहस्पति हो तो जातक राज में सम्मानित, दीर्घायुष्य, उग्र, प्रतापी, धर्मात्मा और पाप से रहित होता है ॥ २ ॥

चन्द्रात् तृतीयभे जीवे नराणां वल्लभो भवेत् ।
धनवृद्धिः पितुर्गेहे वर्षे सप्तदशे तथा ॥ ३ ॥

जिसके जन्मकाल में चन्द्रमा से तृतीय स्थान में बृहस्पति हो वह लोक में प्रिय तथा १७ वें वर्ष की आयु होने पर पिता की सम्पत्ति में अत्यन्त वृद्धि होती है ॥ ३ ॥

चन्द्राच्चतुर्थभे जीवे नरः सुखविवर्जितः ।
मातृपक्षे महाकष्टी परेषां गृहकर्मकृत ॥ ४ ॥

जन्मसमय चन्द्रमा से चतुर्थभाव में बृहस्पति हो तो जातक सुख से रहित, मातृपक्ष से कष्ट पानेवाला तथा दूसरों के यहाँ कार्य करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

चन्द्रात् पञ्चमभे जीवे दिव्यदृष्टिर्भवेन्नरः ।
तेजस्वी पुत्रवांश्चैव महोग्रश्च महाधनी ॥ ५ ॥

चन्द्रमा से पाँचवें बृहस्पति हो तो जातक दिव्य दृष्टि वाला, तेजस्वी, पुत्रवान्, उग्र प्रकृति और धनाढ्य होता है ॥ ५ ॥

चंद्राच्च षष्ठगे जीव उदासी गृहवर्जितः ।
आयुर्बहु भवेत् तस्य भिक्षावृत्याऽव्यवस्थितः ॥ ६ ॥

चन्द्रमा से षष्ठ स्थान में बृहस्पति हो तो जन्म लेनेवाला उदासीन, गृह से रहित तथा दीर्घायु होने पर भी भिक्षा आदि नीच कर्म द्वारा आजीविका चलाने वाला होता है ॥ ६ ॥

चन्द्रात्सप्तमभे जीवे बहुजीवी व्ययं विना ।
स्थूलदेही क्लीबपाण्डुर्गृहमध्ये च नायकः ॥ ७ ॥

चन्द्रमा से यदि सप्तमभाव में बृहस्पति बैठा हो तो मनुष्य दीर्घजीवी, मितव्ययी, स्थूल शरीरवाला, पाण्डुरोग से पीडित तथा घर का मुखिया होता ॥ ७ ॥

चन्द्रादष्टमभे जीवे देहरोगी सदा नरः ।
सुतातोऽपि महाक्लेशी सुखं स्वप्ने न दृश्यते ॥ ८ ॥

जिसके जन्म काल में चन्द्रमा से अष्टम स्थान में बृहस्पति हो वह सर्वदा रोगयुक्त रहनेवाला, अच्छे पिता होने पर भी सन्तान से क्लेश तथा स्वप्न में भी सुख की कल्पना से रहित रहनेवाला होता है ॥ ८ ॥

चन्द्रान्नवमभे जीवे धर्मिष्ठो धनपूरितः ।
सुमार्गे सुगतश्चैव देवगुर्वोश्च सेवकः ॥ ९ ॥

चन्द्रमा से नवम भाव में बृहस्पति हो तो जातक धर्मनिष्ठ, धन से परिपूर्ण, सुमार्ग में चलनेवाला और देव तथा गुरुजनों का सेवक होता है ॥ ९ ॥

चन्द्राद्दशमभे जीवो जन्मकाले यदा भवेत् ।
पुत्र-दारपरित्यागी तपस्वी च भवेन्नरः ॥ १० ॥

जिस मनुष्य के चन्द्रमा से दशम स्थान में बृहस्पति हो वह पुत्र-स्त्री आदि का त्याग करके तपस्वी हो जाता है ॥ १० ॥

चन्द्रादेकादशे जीवो जन्मकाले यदा भवेत् ।
वाहनादिसुखेनाढ्यो राजतुल्यो भवेन्नरः ॥ ११ ॥

चन्द्रमा से एकादश भाव में बृहस्पति हो तो जन्म लेनेवाला अनेक प्रकार के वाहनों का सुख भोगनेवाला तथा राजा के तुल्य होता है ॥ ११ ॥

चन्द्राद् द्वादशभे जीवो जन्मकाले यदा भवेत् ।
स्वकुटुम्बविरोधी च सुखं शत्रोर्दिशेद्गृहे ॥१२॥

यदि चन्द्रमा से बारहवें स्थान में बृहस्पति हो तो जातक अपने कुटुम्ब का विरोधी और शत्रुओं को सुख देनेवाला होता है ॥१२॥

इति गुरुफलम् ।

द्वादशभावस्थ शुक्रफलम्—

चन्द्रेण सहितः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
जले मृत्युर्भवेत्तस्य सन्निपातो हि हिंसया ॥ १ ॥

जन्मकाल में चन्द्रमा के साथ यदि शुक्र हो तो उस जातक की मृत्यु जल से, सन्निपातादि रोग से अथवा किसी हिंसक जन्तु के द्वारा होती है ॥ १ ॥

चन्द्राद् द्वितीयभे शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
महाधनी महाज्ञानी राजतुल्यो न संशयः ॥ २ ॥

जिसके जन्मकाल में चन्द्रमा से द्वितीय स्थान में शुक्र हो वह अत्यन्त धनवान्, महाज्ञानी और राजा के तुल्य होता है, इसमें सन्देह नहीं ॥ २ ॥

चन्द्रात् तृतीयभे शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
धर्मिष्ठो बुद्धिमांश्चैव म्लेच्छतो लाभदायकः ॥ ३ ॥

चन्द्रमा से तृतीयभाव में शुक्र हो तो जन्म लेनेवाला धर्मात्मा, बुद्धिमान् तथा म्लेच्छजाति के लोगों से धन का लाभ करनेवाला होता है ॥ ३ ॥

चन्द्राच्चतुर्थगः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
कफाधिको महाक्षामो वार्द्धक्ये धनपूरितः ॥ ४ ॥

जन्म समय चन्द्रमा से चतुर्थभाव में शुक्र हो तो जातक कफ-प्रकृतिवाला, दुर्बल देह तथा वृद्धावस्था में धनवान् होता है ॥

चन्द्रात् पञ्चमगः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
बहुकन्याप्रजावान् स धनाढ्योऽप्ययशोन्वितः ॥ ५ ॥

चन्द्रमा से पांचवे शुक्र हो तो जातक अधिक कन्या सन्तति-वाला एवं धनिक होने पर भी अपयश का भागी होता है ॥ ५ ॥

चन्द्रात् षष्ठगृहे शुक्रो जन्मकाले यदाभवेत् ।
दुर्व्ययोद्भयकारी च सङ्ग्रामे च पराजितः ॥ ६ ॥

चन्द्रमा से षष्ठस्थान में शुक्र हो तो जन्मजात बालक कुकार्य में खर्च करनेवाला, भयङ्कर तथा युद्ध में पराजित रहनेवाला होता है ॥ ६ ॥

चन्द्रात्सप्तमभे शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
प्रसिद्धो हि महायोद्धा दाता भोक्ता महाधनी ॥ ७ ॥

चन्द्रमा से सप्तम स्थान में शुक्र हो तो मनुष्य लोक में प्रसिद्ध, शूरवीर, दानी, भोगी तथा धनी होता है ॥ ७ ॥

चन्द्रादष्टमभे शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
पुरुषार्थविहीनोऽसौ शङ्कितश्च पदे पदे ॥ ८ ॥

जिसके जन्मकाल में चन्द्रमा से अष्टमभाव में शुक्र हो वह पुरुषार्थ हीन और पद-पद में शङ्कित होनेवाला होता है ।

चन्द्राद् धर्मगतः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
बहुभ्राता तथा मित्रभगिनीबहुलो भवेत् ॥ ९ ॥

चन्द्रमा से नवमस्थान में शुक्र हो तो जन्म लेनेवाला बहुत सहोदर भाई-बहनवाला और अनेक मित्रवाला होता है ॥ ९ ॥

चन्द्राद् दशमभे शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
माता-पित्रोः सुखप्राप्तिर्जीवितं तु बृहद्भवेत् ॥१०॥

जिस मनुष्य के चन्द्रमा से दसवें स्थान में शुक्र हो वह माता-पिता के सुख से युक्त तथा दीर्घजीवी होता है ॥ १० ॥

चन्द्रादेकादशे शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् ।
बह्वायुश्च भवेत्तस्य रिपुरोगविवर्जितः ॥ ११ ॥

यदि जन्मकाल में चन्द्रमा से एकादश स्थान में शुक्र हो तो जातक शत्रु और रोग रहित होकर दीर्घायु लाभ करता है ॥

चन्द्राद् द्वादशभे शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत्
परदाररतो नित्यं लम्पटो ज्ञानवर्जितः ॥ १२ ॥

चन्द्रमा से बारहवें भाव में यदि शुक्र हो तो जातक पर-स्त्री गामी, लम्पट और ज्ञान रहित होता है ॥ १२ ॥

इति शुक्रफलम् ।

द्वादशभावस्थ शनिफलम्—

चन्द्रेण सहितो मन्दो जन्मकाले यदा भवेत् ।
रोगयुक्तोऽर्थहीनश्च बन्धुहीनोऽथवा भवेत् ॥ १ ॥

जन्मकाल में यदि चन्द्रमा के साथ शनि हो तो जातक रोग युक्त, धनहीन अथवा बन्धु हीन होता है ॥ १ ॥

चन्द्राद् द्वितीयभे मन्दो जन्मकाले यदा भवेत् ।
मातुश्च कष्टकारी च अजाक्षीरेण जीवति ॥ २ ॥

जिसके जन्मकाल में चन्द्रमा से द्वितीय भाव में शनि हो वह माता के लिये कष्टप्रद अथवा माता के देहान्त हो जाने के कारण बकरी का दूध पीकर जीता है ॥ २ ॥

चन्द्रात् सहजगो मन्दो जन्मकाले यदा भवेत् ।
बहुकन्या भवेत्तस्य उत्पद्य म्रियते ध्रुवम् ॥ ३ ॥

चन्द्रमा से तृतीय स्थान में शनि हो तो जन्म लेनेवाले की सन्तान जीति नहीं अर्थात् होती और होकर मर जाती है अथवा अधिक कन्या ही उत्पन्न होती है ॥ ३ ॥

चन्द्राच्चतुर्थगो मन्दो जन्मकाले यदा भवेत् ।
महापौरुषकारी च शत्रुहान्ता न संशयः ॥ ॥४॥

जन्म समय चन्द्रमा से चतुर्थ भाव में शनि हो तो जातक में अत्यन्त पुरुषार्थ एवं शत्रु को परास्त करने की विशेष क्षमता रहती है, इसमें सन्देह नहीं ॥ ४ ॥

चन्द्रात् पञ्चमगो मन्दो जन्मकाले यदा भवेत् ।
नारी स्यामलवर्णाऽस्य तथा च प्रियवादिनी ॥ ५ ॥

चन्द्रमा से पांचवें शनि हो तो जातक की पत्नी श्यामवर्णा और मृदुवादिनी होती है ॥ ५ ॥

चन्द्रात् षष्ठगृहे मन्दो जन्मकाले यदा भवेत् ।
महाक्लेशी स कष्टी च आयुर्हीनो भवेन्नरः ॥ ६ ॥

चन्द्रमा से षष्ठस्थान में शनि हो तो जन्मजात बालक कष्टभागी, महाक्लेशी और अल्पायु होता है ॥ ६ ॥

चन्द्रात् सप्तमराशीस्थो यदा स्याद् रविनन्दनः ।
महाधर्मी स दाता च बहुस्त्रीणां करग्रहः ॥ ७ ॥

चन्द्रमा से सप्तमस्थान में शनि हो तो मनुष्य महान् धर्मात्मा, दाता और अनेक पत्नियोंवाला होता है ॥ ७ ॥

चन्द्रादष्टमगो मन्दो जन्मकाले यदा भवेत् ।
पितुश्च कष्टकारी च बहुदाने शुभं भवेत् ॥ ८ ॥

जिसके जन्मकाल में चन्द्रमा से अष्टम शनि हो वह पिता को कष्ट देनेवाला होता है किन्तु अधिक दानादि करने से शुभ कारक कहा गया है ॥ ८ ॥

चन्द्रान्नवमगो मन्दो जन्मकाले यदा भवेत् ।
तदा तस्य दशाकाले धर्महानिः प्रजायते ॥ ९ ॥

चन्द्रमा से नवमभाव में यदि शनि हो तो जन्म लेनेवाले की शनि की दशा-अन्तर्दशा आदि में धर्म की हानि होती है ॥९॥

चन्द्राद् दशमगो मन्दो जन्मकाले यदा भवेत् ।
नृपतुल्यो भवेद् देही कृपणो धनपूरितः ॥१०॥

जिस मनुष्य के जन्मकाल में चन्द्रमा से दशवें स्थान में शनि हो वह राजा के समान ऐश्वर्यवान् होकर भी कृपण (कंजूस) होता है ॥ १० ॥

चन्द्रादेकादशे मन्दो जन्मकाले भवेद्यदि ।
तदा पशुधनैर्युक्तो दीर्घायुश्च सुखी नरः ॥११॥

यदि जन्मकाल में चन्द्रमा से एकादशभाव में शनि हो तो जातक पशु-धन से युक्त, दीर्घायु और सुखी रहनेवाला होता है ॥ ११ ॥

चन्द्राद् द्वादशभे मन्दो जन्मकाले यदा भवेत् ।
निर्धनो भिक्षुकश्चैव धर्मेणाऽपि विवर्जितः ॥१२॥

चन्द्रमा से बारहवें स्थान में यदि शनि हो तो जातक निर्धन, भीख मांगकर पेट पालनेवाला और अधर्मी होता है ॥ १२ ॥

इति शनिफलम् ।

द्वादशभावस्थ राहुफलम्—

प्रथमे दशमे धर्मे चन्द्राद्यदि भवेत्तमः ।
बाल्यकाले सुखी स स्याद् वृद्धकाले महाधनी ॥१॥

चन्द्रमा से १।९।१० स्थान में राहु हो तो जातक बाल्यावस्था में सुखी और वृद्धावस्था में विशेष धन प्राप्त करता है ॥ १ ॥

तृतीयैकादशे षष्ठे राहुश्चन्द्राद् भवेद्यदि ।
स राजा राजमन्त्री वा धन-धान्य समन्वितः ॥ २ ॥

यदि चन्द्रमा से ३।६।११ वें स्थान में राहु हो तो मनुष्य राजा या राजमन्त्री अथवा सब प्रकार के धन-धान्यादि से परिपूर्ण रहनेवाला होता है ॥ २ ॥

चतुर्थे सप्तमे राहुश्चन्द्रतो यदि जायते ।
माता पिता तथा नारी तस्य कष्टेन संयुताः ॥ ३ ॥

जिसके जन्मकाल में चन्द्रमा से ४ या ७ वें स्थान में राहु हो उसके माता पिता एवं पत्नि को कष्ट होता है ॥ ३ ॥

धनेऽव्ययेऽष्टमे स्थाने चन्द्राद्राहुःयदा भवेत् ।
धनमानवसंयुक्तः सुखं स्वप्ने न दृश्यते ॥ ४ ॥

यदि जन्मकाल में चन्द्रमा से २।८।१२ वें में राहु हो तो जन्म लेनेवाला धन-जन से परिपूर्ण रहकर भी कभी सुखी नहीं रह पाता ॥ ४ ॥

पञ्चमे च यदा राहुश्चन्द्राज्ज लजसम्भवम् ।
निधनं चापि संसिद्ध मापदश्च पदे पदे ॥ ५ ॥

यदि चन्द्रमा से पांचवें स्थान में राहु हो तो जातक की मृत्यु जल में डूबने से होती है। एवं उसको जीवन में पद-पद पर आपत्तियां झेलनी पड़ती है ॥ ५ ॥

इति राहुफलम् ।

केतोरपि फलं ज्ञेयं चन्द्राद्राहुसमं बुधैः ।
इति संक्षेपतः प्रोक्तं चन्द्राद् भावफलं मया ॥ १ ॥

यहाँ राहु के समान ही केतु के भी फल समझना। इस प्रकार हमने संक्षेप से चन्द्रमा से द्वादशभावस्थित नवग्रहों का फल निरूपण किया ॥ १ ॥

वर्षे जिननखैस्तुल्ये वैक्रमे मार्गशीर्षके ।
गौर्युक्तजातकस्येयं टीका सम्पूर्णतां गता ॥
यदाशिषा मया लब्धं ज्ञानं तस्मै समर्प्यते ।
गुरवे ज्यौतिषाचार्य-श्रीसीतारामशर्मणे ॥

इति राजस्थानमण्डलान्तर्गत 'विसाऊ' ग्रामनिवासि-
श्रीनागरमलगुप्तात्मजदैवज्ञवाचस्पतिश्रीवासुदेवकृता
गौरीजातके भाषाटीका समाप्ता ।

॥ शुभम् ॥